प्रयास तेज हो जाएं तो मिले नई पहचान

खूबसूरत पुराधरोहर को संरक्षण की दरकार

सीहोर जिले की झोली पुरा धरोहर से भरी हुई है, लेकिन हाथ फिर भी खाली है। जिले में कभी कभार ही कोई पर्यटक दिखता है। यह हाल तब है, जब सीहोर जिला इंदौर-भोपाल दो बड़े महानगर के बीच स्थित है। ज्यादातर पर्यटक इसी रूट से आवाजाही करते हैं, लेकिन यहां नहीं रूकते। हालांकि, इसका कारण यह नहीं है कि जिले में पर्यटन विभाग ने कोई काम नहीं किया है, पुरा धरोहरों के संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास हो रहे हैं, लेकिन काम की गति धीमी और प्रचार-प्रसार नहीं होने के चलते पर्यटकों का रुख जिले की तरफ नहीं हो पा रहा है।

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सीहोर. मंगलवार को विश्व धरोहर दिवस के उपलक्ष्य में पत्रिका ने कुछ विशेषज्ञों से बातचीत की। इसमें निकलकर सामने आया कि जिले में पर्यटन विकास की अपार संभावनाएं हैं। यदि सबकुछ ठीक रहा तो वह दिन दूर नहीं जब यहां बड़ी संख्या में पर्यटक आएंगे।

विश्व धरोहर दिवस पर विशेष

जिले के सलकनपुर स्थित मां विजयासन देवी धाम में उज्जैन महाकाल की तर्ज पर देवी लोक बनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सीहोर के ऐतिहासिक नितामन गणेश मंदिर को ट्रस्ट और शहीद स्थल को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की घोषणा की है। इसके साथ ही जावर के देवबड़ला में खुदाई के दौरान मिले 12 मंदिर में से एक का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है, एक निर्माणाधीन है। विहाजा, वह दिन दूर नहीं जब देश-विदेश से पर्यटक सीहोर आएंगे।

प्राकृतिक सौंदर्य से प्रभावित करता देवबड़ला का मंदिर

जिले के जावर क्षेत्र के घने जंगल के बीच स्थित प्राचीन देवबड़ला एक ऐतिहासिक धरोहर है। देवबड़ला में भगवान भोलेनाथ का प्राचीन मंदिर है, जो हरियाली से घिरा है। यहां का हरा-भरा वातावरण हर किसी को अपने प्राकृतिक सौंदर्य से प्रभावित करता है। यह पर्यटन स्थल निरंतर प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा है। यहां आने वाले पर्यटक की संख्या में इजाफा हो रहा है। पहले यहां आसपास गांव के लोग ही पहुचते थे, लेकिन जब से पर्यटन विकास निगम ने यहां पर पुरा धरोहर को सहेजने का काम शुरू किया है, पर्यटकों की संख्या भी बढ़ने लगी है। अब यहां प्रदेशभर से लोग घूमने आते हैं, यहां के खूबसूरत पलों को मोबाइल में कैद करते हैं।

जावर के भीलपान ग्राम पंचायत के तहत आने वाले ऐतिहासिक देवबड़ला देवाचंल धाम का इतिहास करीब 1100 साल पुराना है। साल 2016 में दुर्लभ प्रतिमा होने की जानकारी मिलने के बाद पुरातत्व विभाग ने जनवरी 2017 में खुदाई शुरू की थी। इसमें परमाकालीन दो मंदिर मिले थे। इन मंदिरों से 11वीं, 12वीं शताब्दी की 20 प्राचीन व दुर्लभ प्रतिमा थी। मंदिर क्रमांक एक शिव मंदिर और मंदिर क्रमांक दो विष्णु मंदिर से मिली प्रतिमा हिन्दू देवी देवताओं की थी। इनमें बमदेव, गौरी, भैरव, भूवराह, देवी लक्ष्मी, योगिनी और शिव नटराज की प्राचीन प्रतिमाएं शामिल थी। पुरातत्व विभाग वर्तमान में यहां 51 फीट ऊंचाई के दो मंदिर का निर्माण करा रहा है, जिसमें एक का काम पूरा हो गया है, दूसरे का चल रहा है। देवबड़ला समिति के अध्यक्ष ओमकार सिंह भगत 30 साल पहले इस स्थान पर शिफ्ट हुए, तभी से उन्होंने देवबड़ला स्थल की संवारने का काम शुरू किया। यह प्रयास रंग भी लाया है। अब देवबड़ला का नाम पर्यटन स्थल में शामिल हो गया है।

पर्यटक बढ़ने के भरपूर आसार

डिपार्टमेंट ऑफ आर्किटेक्चर स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर के स्टूडेंट्स की एक टीम ने सीहोर शहर की पुरातत्व धरोहरों को लेकर एक स्टडी तैयार की है। दो-तीन महीने पहले इसका प्रजेंटेशन भी जिला पंचायत सभाकक्ष में दिया गया था। उस समय कुछ ऐसा प्लान किया था कि 10 ऐसे टैक्सी ड्राइवर चिन्हित किए जाए, जो यहां आने वाले पर्यटक को इन जगहों पर ले जाए और इसके बारे में बताए। इसकी एक बुकलेट भी तैयार करा रहे हैं, जिसका एनआइसी की वेबसाइट पर प्रदर्शन किया जाएगा, जिसे पुरातत्व प्रेमी देखें और आकर्षित होकर यहां आएं।

प्रवीण सिंह, कलेक्टर सीहोर

ये भी हैं विशेष

भोपाल रियासत का पहला चर्च, बनने में लगे 27 साल

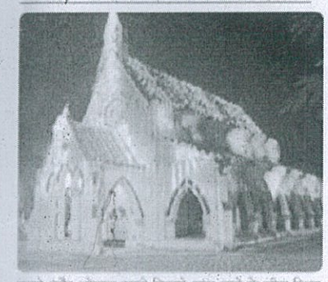

पुराने इंदौर-भोपाल हाइवे किनारे बांस बाड़े के बीच स्थित ऑल सेंट्स चर्च भोपाल रियासत का पहला चर्च है। हर साल क्रिसमस पर यहां विशेष प्रार्थना होती है, चर्च को दुल्हन की तरह सजाया जाता है। यह चर्च करीब 190 साल पुराना है। चर्च के बारे में बताते हैं कि इसके निर्माण में करीब 27 साल लगे थे, यह एशिया का सबसे सुंदर चर्च है इतिहास के जानकार ओमदीप बताते हैं कि ऑल सेंट्स चर्च का निर्माण सन 1834 में अंग्रेजी हुकूमत के पहले पॉलिटिकल एजेंट जेडब्ल्यू ओसबार्न ने अपने भाई की याद में बनवाया था। अंग्रेज अधिकारी यहां प्रार्थना करने के लिए आया करते थे। सीवन नदी के किनारे बने इस चर्च में पहली बार 1860 में प्रार्थना की गई थी। यह चर्च स्कॉटलैंड में बने चर्च को देखकर बनवाया गया था। चर्च के आसपास बांसों के झुरमुट लगाए गए, जिससे कि उसी तरह का वातावरण मिल सके। चर्च की दीवारें लाल पत्थर से बनाई गई हैं, खूबसूरत नक्काशी की गई। बताया जाता है कि 1818 में भोपाल रियासत अंग्रेजी हुकूमत के कब्जे में आ गई और करीब छह साल बाद अंग्रेजी हुकूमत ने यहां सैनिक छावनी बनाई, 1834 में पहले पॉलिटिकल एजेंट के रूप में जेडब्ल्यू ओसबार्न सीहोर आए और उन्होंने चर्च के आसपास के इलाके को सुंदर और हराभरा बनाया। ऐतिहासिक दृष्टि से इतना महत्वपूर्ण होने के बाद भी विकास और डेवलपमेंट के लिए भी अभी तक कोई प्रयास नहीं किए गए हैं।

पर्यटक स्थल के रूप में विकसित होगा शहीद स्थल

ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ 1857 की क्रांति को भारतीय इतिहास में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में देखा जाता है। मेरठ से 10 मई 1857 को सैनिक विद्रोह के रूप में शुरू हुई इस क्रांति ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ विद्रोह का बिगुल फूंका था। पूरे देश के साथ ही मध्य भारत में भी अंग्रेजी हुकूमत ने इस विद्रोह को दबाने के लिए अनेक क्रांतिकारियों को गोली से भून दिया। अंग्रेजी शासन के खिलाफ मध्य भारत में चल रहे विद्रोह में सीहोर की बर्बरतापूर्ण घटना को जलियांवालाबाग हत्याकांड की तरह माना जाता है। दस मई 1857 को मेरठ की क्रांति से पहले ही सीहोर में क्रांति की ज्वाला सुलग गई थी। जनरल ह्यूरोज को जब सीहोर की क्रांतिकारी गतिविधियों के बारे में जानकारी मिली तो उन्होंने इसे बलपूर्वक कुचलने के आदेश दिए। सीहोर में जनरल ह्यूरोज के आदेश पर 14 जनवरी 1858 को सभी 356 क्रांतिकारियों को जेल से निकालकर सीवन नदी किनारे सैकड़ाखेड़ी चांदमारी मैदान में लाया गया। इन सभी क्रांतिकारियों को एक साथ गोलियों से भून कर लटका दिया था। ग्रामीणों ने इन क्रांतिकारियों के शवों को उतारकर इसी मैदान में दफनाया था। मकर संक्रांति के अवसर पर 14 जनवरी को सैकड़ाखेड़ी मार्ग स्थित शहीदों के समाधि स्थल कार्यक्रम होता है।

सारू-मारू की गुफा

बुद्ध काल की याद दिलाती है गुफा

बुदनी ब्लॉक के पास गुराडिया गांव के समीप स्थित बुद्ध कालीन सारू-मारू की गुफा उपेक्षा का शिकार हो रही है। यह गुफाएं करीब 50 एकड़ क्षेत्र में फैली है। यहां करीब 25 से अधिक प्राचीन कालीन स्तूप बने हुए हैं। सारू-मारू की गुफा के पास सम्राट अशोक का पांचवा शिलालेख है, इसके रख-रखाव और सरक्षण की जिम्मा राष्ट्रीय पुरातत्व विभाग का है, लेकिन पुरातत्व विभाग ने सम्राट अशोक के शिलालेख के चारों ओर सुरक्षा के इंतजाम नहीं किया है। इस कारण इस शिलालेख को देखने वाले शरारती तत्व शिलालेख से छेड़छाड़ करते हैं, यह शिलालेख सम्राट अशोक की उज्जैन से विदिशा यात्रा का वर्णन करता है। यहां पर

खंडराओं में बने कुछ शिलालेख धूमिल होकर विलुप्त हो रहे हैं, इनके रखरखाव के लिए केंद्र और राज्य सरकार ने कोई प्रबंध नहीं किए हैं। इसी स्थान से करीब 100 किमी दूरी

रानी कमलापति का महल

गिन्नौरगढ़ किले को सहेजने की जरूरत

भोपाल के हबीबगंज रेलवे स्टेशन को गोंड रानी कमलापति का नाम तो मिल गया, लेकिन जिले के बुदनी स्थित रानी कमलापति का महल अभी भी खंडहर है। दीवार और छत की हालत ऐसी है कि इसके अंदर जाने से भी डर लगता है। जिले की यह ऐतिहासिक धरोहर गोंड संस्कृति और गोंडवाना राज की साक्षी है, जो यह बताता है कि रानी कमलापति का सीहोर जिले से भी नजदीकी रिश्ता रहा है, उनका किला रेहटी तहसील के पास स्थित है, जिसे गिन्नौरगढ़ नाम से जाना जाता है। यह विन्ध्याचल पर्वत श्रृंखला की सलकनपुर पहाड़ी पर सेमरी ग्राम पंचायत से महज दो किलोमीटर की दूरी है। इतिहास बताता है कि गिन्नौरगढ़ के किले का निर्माण 13वीं सदी में गोंड राजा उदय वर्धन ने कराया था। गोंड साम्राज्य सीहोर जिले के गिन्नौरगढ़ से लेकर वर्तमान भोपाल एवं होशंगाबाद तक के क्षेत्र में पाया जाता है। इस रियासत की अंतिम उत्तराधिकारी शासक के रूप में रानी कमलापति ही रही हैं। किले से भोजपुर के शिव मंदिर तक एक सुरंग भी बनी हुई है, जिसके द्वारा रानी कमलापति भगवान शिव का हर सोमवार को अभिषेक करने जाती थीं। पुरातत्व प्रेमी चाहते हैं कि पुरातत्व विभाग के माध्यम से गोंड रानी कमलापति की निशानी गिन्नौरगढ़ किले का जीर्णोद्धार कर इस पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया जाए। हालांकि डेढ़

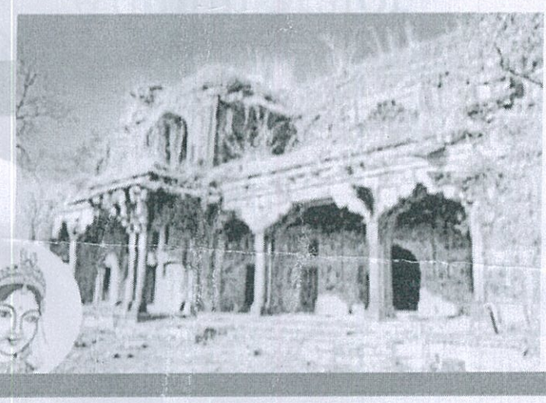

वह दिन दूर नहीं, जब पुरातत्व महत्व के लिए दुनिया में जाना जाएगा सीहोर

सीहोर @ पत्रिका जावर या कहें जिले का एक गौरवशाली अतीत है, यहां की धरा अपनी झोली में इतनी पुरा धरोहर को सहेजे हुए है, जिसका किसी एक जगह मिलना विरले ही होता है। विश्व धरोहर दिवस पर पत्रिका ने भोपाल मैनिट के डिपार्टमेंट ऑफ आर्किटेक्चर स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर की असिस्टेंट प्रोफेसर मानसी अवस्थी से जिले के पुरातत्व महत्व और यहां पर विकास की संभावनाओं को लेकर बातचीत की, जिसमें उन्होंने बताया कि वह दिन दूर नहीं, जब सीहोर की यहां की पुरा धरोहरों से दुनिया में एक अलग पहचान बनाएगा।

पुरा विशेषज्ञ मानसी अवस्थी से विशेष बातचीत

प्र पुरात्व की दृष्टि से देखें तो सीहोर कितना महत्वपूर्ण है।

उ पुरातत्व की दृष्टि से सीहोर बहुत महत्वपूर्ण है। इतिहास के पन्नों को पलटकर देखा जाए तो हमें कई ऐसी विशेषताओं के बारे में पता चलता है, जो एशिया में दूसरी जगह कहीं नहीं हैं। चाहे हम कुंवर चैन सिंह की छतरी हो या फिर ऑल सेंट्स चर्च, 1857 की क्रांति का नगाड़ा सैकड़ाखेड़ी स्थित शहीद स्थल हो देश को जलियांवाला बाग हत्याकांड की याद दिलाता है, जहां 356 क्रैदियों को एक साथ बंदूक की गोलियों से भून दिया गया। सीहोर का शहर है, जिसे सैन्य, शासन, जैन, वैष्णव, बौद्ध और नाथ पुजारियों ने अपने गहरे ध्यान का एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया था। अपने शहर के बारे में यहां के लोग अभी भी गर्व महसूस करते हैं।

प्र पुरातत्व की दृष्टि से इतना महत्वपूर्ण होने के बाद भी, हम पीछे क्यों हैं।

उ पीछे नहीं है, हर काम में समय लगता है, सीहोर का जितना गौरवशाली अतीत है, उसके साथ ही कुछ विशमताएं भी हैं। अभी पर्यटकों का रुख इधर नहीं हो सका है। इसका कारण है अभी कार्य पूर्ण नहीं हुए हैं, जावर में प्राचीन देवबड़ला मंदिर का काम चल रहा है। बिलकिसगंज में भी तेजी से कुछ गतिविधियों को अंजाम दिया जा रहा है। ऐतिहासिक वितामन गणेश तो देश के चार प्रमुख स्वयं भू मंदिर में से एक है, इसका इतिहास करीब 2 हजार साल पुराना है, यहां देश के कोने-कोने से श्रद्धालु आते हैं।

प्र आपके हिसाब से पर्यटन विकास की और क्या संभावनाएं हैं।

उ कनेक्टिविटी के लिहाज से भी जिले में पर्यटन गतिविधियों के विकास की अपार संभावनाएं हैं। जिले से चार स्टेट हाइवे और दो नेशनल हाइवे गुजरते हैं। इंदौर और भोपाल दो बड़े महानगर के बीच स्थित है, इस रूट पर सफर करने वाले पर्यटक सीहोर जिले की सीमा से ही सफर करते हैं, लेकिन रोड मैप नहीं होने के कारण वह यहां की पुरा धरोहरों के बारे में उतना नहीं जान पाते हैं, जितना कि यहां पर पुरातत्व की विशेषताएं मौजूद हैं, जिनसे वह आकर्षित हो सकें। पर्यटक के लिए रोड मैप तैयार करना चाहिए।

प्र आने वाले समय में आप सीहोर को कैसा देख रही हैं।

उ मध्यप्रदेश और भारत सरकार कई महत्वपूर्ण योजनाओं के तहत जिले की पुरा धरोहरों को संवारने के काम में जुटी हुई हैं, जिससे यह उम्मीद की जा सकती है कि आने वाले समय में सीहोर देश में एक ऐसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होगा, जिसे देखने की जिज्ञासा हर पर्यटक के मन में रहेगी।

कटेंट: कुलदीप सारस्वत